..... इनमे से कौन है मेरा भाई ?

"इस बंधुत्व का कभीं भी अंत नहीं।"

गाँव से हमेशा माँ के चिट्ठियाँ आते है 'कहती है लाटो तुम ठीक हूना। मुझे हर दिन तुमहारा फिक्र होती है। मैं और लटटू हर एक दिन गिन कर जी रही है तुमहारा इंतज़ार में' माँ की इन चिट्ठियाँ ही मुझें हिम्मत देती है जीने की। उनकी चेहरे पर खिलनेवाली मुसकान मेरे दिल का सुकून है लेकिन वह मुसकान मिटकर अब हमेशा दुख दिखाई दे रही है। कशमीर की इस खतरनाक जगह मे आकर अब पाँच साल पूरा होगई लेकिन अभी भी दिल तेज चल रही पता नही क्यू।
अब पुरानी यादें मन मे खिल उडी। माँ के पल्लू पकडकर जब स्कूल जाते तो वह हमेशा मुझसे कहते थे 'मेरा लाडला बडे होकर एक डॉक्टर बनना' उनकी वही इच्छा थी। लेकिन मुझे उनसब से कोई लेना देना नही बस खेल कूद कर मजें करने थे।

पापा एक बड़ी बिस्नेस चलाती थी इसलिए हमारे घर में पैसे की कोई कमी नहीं होती थी। खुशी और आराम की ज़िंदगी जहा कोई भी चीज़ केलिए कोई कमी नहीं होती थी। जब लट्टू यानी मेरा छोटा भाई का जनम हुआ था मैं दस साल का था तो मुझसे उमर के लिए बहुत छोटा था। हम दोनो हमेशा एक साथ थी। मैं उसे देखे बिना नहीं रह सकती थी।

लेकिन वह खुशी का दिन बहुत साल तक नहीं रहीं। पापा के बिस्नेस अच्छी नही चल रहीं थी। उन्को बहुत नुकसान हुआ और आखिर पापा ने खुदखुशी करली। पापा के बिस्नेस के बारे में मैं और माँ कुछ नहीं जानती थी। रोज़ घर पर लोग पैसे माँगकर आने लगी। हमने हमारी कार भेजदी। माँ की कुछ सोने थे वो भी गिरवी रख दिया। एक छोटे से बच्चे को अपने हाथ में रखकर मैं और माँ सडक पर आ खड़ा था। ज़िंदगी एक ऐसे मोड पर आकर खड़ा कर दिया जहा से आगे जाना बहुत मुशकिल थी।

माँ दूसरों के घर पे जाकर काम करना शुरू किया कभी कभी जो खाना मिलता था वह मुझे और भाई को देकर माँ भूखा रहता था। लेकिन मेरे पढाई के कार्य में माँ कोई कमी नहीं आने देती थी जब दूसरे बच्चे अच्छे कपड़े पेहनकर बड़े बड़े गाडियों में स्कूल आते थे मैं अपने माँ के हाथ पकडकर स्कूल जाती थी जिससे मुझे दुगनी खुशी मिलती थी। मेरी माँ की सहारा मैं थी सिर्फ मैं ही थी जिन्से वो अपने सुख और दुख बाँट सकती थी। मैं पढाई में हमेशा आगे थे लेकिन भाटा हुआ कपडा पेहनकर आने वालों को कौन दोस्त बनाना चाहूँगा। लेकिन अकलमंद होने के कारण सारी अध्यापकों का आखों का तारा थी मैं। इन सारी दुख से गुजरनेवाले हमारे जिंदगी में एक खुशी के मौका आ गई। हाँ! मुझे इंडियन आर्मी में काम मिली। मैं बहुत खुश थी हमारे घर की सारी मुशकिलों का अंत मेरी इस नौकरी से होगी।

लेकिन मेरी इस काम मिलने से माँ बिलकुल खुश नहीं थी। उनकी विचार थे कि एक जवान होना जान के साथ खेलने की तुल्य है। लेकिन मेरे सामने तो सिर्फ मेरे माँ और मेरे भाई का चेहरा था। इसलिए मैं घर से लौटने की सारी तैयारी की। लौटने से पहले माँ ने मुझसे कहा था 'कभी भी अपने आप को अकेला मत समझना मैं और मेरी प्रार्थना हमेशा तुम्हारे साथ है'।

अचानक एक रोने की आवाज़ सुनकर मैं होश में आगई। मेरे दोस्त अस्लम एक कोने में खड़े रो रहा था। मैंने उससे पूछा "क्या हुआ मेरे दोस्त तू ~~क्यू~~ रो रहा है?" अस्लम ने कहाँ "घर से अब मेजर को एक कॉल आया था कह रहा था की मेरी माँ का मौत होगई" अचानक उसकी बातों से मुझे अपनी माँ की चेहरा याद आया उस केलिए यह कितनी मुश्किल की बात है यह मैं अच्छी से जानते थे। उसने मुझे बताया "मैं आखरी बार अपनी माँ को नहीं देख पाई"

मैंने उसके आँसू पोंछा और उससे कहा "यार तू हिम्मत मत हार तुम्हारा माँ हमेशा तेरे साथ होंगे" उसने मुझे खास के पकड़ा और रोकर थका हुआ सामने बैठ गई। मैं कुछ देर के लिए खामोश थी बहुत कुछ मन में गुज़र रहा था। शायद यह कल मेरे साथ भी हो तो। नहीं। मैं सोच भी नहीं सकती थी। पसीने से मेरे चेहरा गीला पटा। हम जवानों का ज़िंदगी ही ऐसा है लेकिन हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। मैंने अपनी मन ही मन कहा।

सुन्दरी दिन सूरज की रोशनी से खिला हुआ फूल। ओस की बूँदों को रोशनी ने छलकाया। सारी जगह शोर है। गाँव से माँ की चिट्ठी आई है। उसपे ऐसा लिखा हुआ है। "भैय्या आप कब वापस आओगे मेरी आँखे आपको देखने के लिए तरस रही हैं। आप के जाने के बाद मैं और माँ कभी भी खुश नहीं रही अब हम तभी खुश होंगे जब आप हमारे पास आओगे मैं आपका इंतज़ार कर रही हूँ। भैय्या जल्दी लौट आओ"

चिट्ठी मिलकर खुशी भी हुई पर साथ साथ दुख भी। अचानक मेजर के कल्पना मिली की कुछ आतंगवादियों ने कश्मीर की मेखला में पहुँचा है तुरंत सब प्रतिरोध और आक्रमण केलिए तैयार रहें। इनके कल्पना हम सब को डरा दिया हम सब चौंक गई। मेरा मन कहने लगा इनमें से कौन है मेरा भाई। जो अपने देश केलिए जान देने वाली सारी सैनिक या चिट्ठी में दिखा वह छोटा भाई का चेहरा। किसके साथ रहूँ मैं अपने खुद के भाई के साथ या इन देश की हज़ारों भाईयों के साथ? .....

मन चिंतित थे। अपने को हाथ में लेकर माँ की वह बात मन में रखकर अपने राईफल को हाथ में लेकर मैं आगे बढ़ा अब जो आए वह सब ईश्वर के हाथों में सौंप रही हूँ। अपने माँ के चेहरे को नज़रों में रखकर भारत माँ की नाम अपने ओंठों पर बसाकर मैं अपनी आगे बढ़ रही हूँ। .....